विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 26 मई 2020

वर्ग अष्टम राजेश कुमार पाण्डेय

दिव्य वाणी द्वितीय: पाठ:

कविकुलगुरु:कालिदास:

संस्कृतसे हिंदी अनुवाद सहित

कालिदासःमहाराजःविक्रमादित्यस्यसभापण्डितःआसीत्।

कालिदास महाराज विक्रमादित्य के सभा पंडित थे।अर्थात विक्रमादित्य के सभा में विद्वान थे।

इदंकथ्यतेयत्बाल्यकालेकालिदासःमुर्खःआसीत्।

यह कहा जाता है कि बाल्यकाल में कालिदास मूर्ख थे।

तस्यविवाहःविघोतमानामविदुष्यासहअभवत्।

उनका विवाहविद्योतमानाम के विदुषी के साथ हुआ।

पत्न्याःआपमानेनदुःखीभूत्वासःमहाकाल्यामन्दिरेआराधनांकृतवान्।

पत्नी के अपमान से दुखी होकर वह महाकाली मंदिर में आराधना किए।

महाकाल्यआशर्वादेनसःविद्वान्अभवत्।

महाकाली के आशीर्वाद से वे विद्वान हुए।

कविकुलगुरूःकालिदासंकोनजानाति ?

कविकुलगुरुकालिदास को कौन नहीं जानता है?

कालिदासःसंस्कृतसाहित्यस्यसर्वोत्तमंःकविःआसीत्।

कालिदास संस्कृत साहित्य के सर्वोत्तमकवि थे।

असौनाटकानिमहाकाव्यानिगीतिकाव्यानिचअलिखत।

वे अनेकनाट्य काव्य और गीत काव्य लिखें।

कालिदासःनकेवलंभारतस्य अपितु विश्वविख्यातःकविःअस्ति।

कालिदासकालिदास ना केवल भारत के बल्कि संसार के विख्यात कवि हैं।